बुल्ला की जाणा मैं कौण

[Bulle Shah]

बुल्ला की जाणा मैं कौण।।

न मैं मोमन विच मसीतां, न मैं विच कुफ़र दीआं रीतां।
न मैं पाकां विच पलीतां, न मैं मूसा न .फरऔन[1] ।।
न मैं अंदर बेद किताबां, न विच भंगां न शराबां।
न विच रिंदा[2] मस्त खराबां, न विच जागण न विच सोण।।
न विच शादी[3] न .गमनाकी[4], मैं विच पलीती[5] पाकी[6]।
न मैं आबी न मैं .खाकी, न मैं आतिश न मैं पौण[7] ।।
न मैं अरबी न लाहौरी, न मैं हिंदी शहर नगौरी।
न हिंदू न तुरक पशौरी, न मैं रैह्न्दा विच नदौन।।
न मैं भेद मजहब दा पाया, न मैं आदम हव्व दा जाया।
न मैं आपना नाम धराया, न विच बैठन न विच भौन[8] ।।
अव्वल आखर आप नूं जाणा, न कोई दूजा होर पछाणा।
मैथों होर न कोई स्याणा, बुल्ला शौह खड़ा है कौण।।

---

1. एक अहंकारी बादशाह, 2. शराबी, 3. .खुशी, 4. .गमी 5. गन्दगी, 6. पवित्रता, 7. मैं पानी, मिट्टी, आग, हवा और आकाश अर्थात् पाँच तत्वों की उपज नहीं हूँ। 8. आत्मा जड़ नहीं है कि हिलजुल न सके और न ही आत्मा की मूल प्रकृति पर आवागमन का प्रभाव होता है।